माता पृथ्वी से प्रार्थना

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥

वे पृथ्वी माँ
जो कभी समुद्र में जलमग्न थीं,
और जिन्हें ऋषि-मुनियों ने अपनी अद्भुत शक्तियों से खोज निकाला,
जिनका हृदय शाश्वत स्वर्ग में वास करता है
और परम सत्य व अनश्वरता से आच्छादित है—
वे माता हमें और समस्त लोगों को
अपनी दीप्ति व बल प्रदान करें।

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥

वे पृथ्वी माँ
जिन पर जलधाराएँ अनवरत रूप से, अहोरात्र बहती हैं,
हमें अपनी प्रचुर जलधाराओं रूपी क्षीर प्रदान करें
तथा अपने वैभव और शोभा की हम पर वर्षा करें।

विमृग्वरीं पृथिवीमा वदामि क्षमां भूमिं ब्रह्मणा वावृधानाम्।
ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभि नि षीदेम भूमे॥

हे माता पृथ्वी,
आप परम शुद्धिकारिणी हैं
जो परब्रह्म की शक्ति से फलती-फूलती हैं।
हे क्षमाशालिनी, मैं आपका आवाहन करता हूँ।
आप अन्न और घृत का,
पोषण व सुख-समृद्धि का स्रोत हैं,
हम आपमें विश्रान्ति पाएँ।

अथर्ववेद १२.१.८–९, २९

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।